PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

फरवरी 2006 ISSUE 0206 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

परीक्षा में खरे उतरो और सच्चा इनाम पाओ

प्रभु येशु, अपने पकड़वाये जाने से पहले गेथसेमनी नामक बाग में अपने शिष्यों को साथ ले गये। आठ शिष्यों को बाग में रोककर, पेत्रुस और ज़ेबेदी के दो पुत्रों को साथ लिया और उनसे व्याकुल व उदास होकर कहा, "मेरी आत्मा इतनी उदास है कि मैं मरने–मरने को हूँ। यहाँ ठहर जाओ और मेरे साथ जागते रहो।" यह प्रभु येशु के लिए परीक्षा की तैयारी की घडियाँ थीं जब वह अपनी परीक्षा–दुःखभोग, क्रूस पीड़ा, अत्याचार व म त्यु को अपनी आँखों में देख रहे थे। इस की तैयारी के लिए उन्हें आध्यात्मिक शक्ति व शारीरिक सहनशीलता जुटानी थी। "इसलिए वे कुछ आगे बढ़ कर मुँह के बल गिर पड़े (पिता को पूर्ण समर्पण) और अपने पिता (परमेश्वर) से प्रार्थना करने लगे।" "तब उन्हें स्वर्ग का एक दूत दिखाई पड़ा जिसने उनको ढारस बँधाया। वे प्राणपीड़ा में पड़ने के कारण और भी एकाग्र होकर प्रार्थना करते रहे और उनका पसीना रक्त की बूँदों की तरह धरती पर टपकता रहा।"

(लूकस22:41-44)

*"तब व अपने शिष्यों के पास गये और उन्हें सोया हुआ देखकर पेत्रुस से बोले, "क्या तुम लोग घण्टे भर भी मेरे साथ नहीं जाग सके? **जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो तत्पर है, किन्तु शरीर दुर्बल।"***

वे फिर दूसरी बार जाकर प्रार्थना करने लगे और लौटने पर उन्होंने अपने शिष्यों को फिर सोया हुआ पाया, क्योंकि उनकी आँखें भारी थीं। वे उन्हें छोड़कर फिर गये और तीसरी बार उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की।

*इसके बाद उन्होंने अपने शिष्यों के पास आकर उन से कहा,"अब तक सो रहे हो ? अब तक आराम कर रहे हो ? वह घड़ी आ गई है जब मानवपुत्र पापियों के हवाले कर दिया जायेगा।" **(मत्ती 26:36-45)***

*इससे पहले प्रभु के शिष्यों मे से एक, यूदस के अन्दर शैतान घुस चुका था, जब प्रभु ने अपनी थाली में से रोटी का टुकड़ा दाखरस में डुबो कर उसे अपने अन्तिम भोज के समय दिया था। **(योहन 13:26-28)** धर्मग्रन्थ का कथन पूरा हो जाना अनिवार्य था : जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझे लंगी मारी है। **(योहन 13:18, स्तोत्र 41:9)** यह जानकर भी उनका एक शिष्य उनके साथ विश्वासघात करेगा, उन्होंने उसे कम प्रेम नहीं किया या अपने साथ भोजन करने से मना नहीं किया। यूदस ने चाँदी के तीस सिक्कों के लिए प्रभु को गेथसेमनी बारी में चुम्बन करके पकडवा दिया। **(लूकस 22:47-48)** और जब प्रभु को पकड़ लिया गया तब एक शिष्य ने तलवार चला कर एक प्रधानयाजक के नौकर (मलखुस) का कान उड़ा दिया। प्रभु ने पेत्रुस को डाँटा और कहा, "रहने दो, बहुत हुआ।" और उस नौकर का कान छू कर प्रभु ने उसे अच्छा कर दिया। **(लूकस22:50-51)** जब शिष्यों ने यह सुना कि यह होना अनिवार्य था (नबियों की भविष्यवाणी की पूर्ति) तो सभी शिष्य येशु को छोड़ कर भाग गये। **(मत्ती26:56, मारकुस 14:50-52)** बाद में पेत्रुस, जो प्रभु के पीछे–पीछे छिप कर गया, ने प्रभु को तीन आर अस्वीकार भी कर दिया, जैसे प्रभु येशु*

(शेष भाग प ष्ठ 2 पर)

दयासागर माँ मरियम से एक विनय प्रार्थना

"दयासागर हे माँ, रोगियों के स्वास्थ्य और पापियों की शरण! मुझे अपने जैसे ईश्वर का विनम्र व आज्ञाकारी सेवक बना। अपनी ममता, शान्ति व आनन्द मुझ पर उँडेल दे जिससे मैं दूसरों को तेरे तथा तेरे पुत्र की ओर आक ष्ट कर सकूँ, ईश्वरीय संरक्षण का अनुभव कर सकूँ। मेरे लिए अभी और हर दिन अपने प्रिय पुत्र से मध्यस्थ कर जिससे मैं ईश्वर की महिमा व क पा का पात्र बन सकूँ, पवित्रता में जीवन बिता सकूँ। तेरे पुत्र प्रभु येशु के वचनों का पालन करने के लिए, प्रतिदिन का क्रूस खुशी से उठा कर द ढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए तथा अन्त में पाप व म त्यु पर विजय प्राप्त कर तेरे पुत्र के साथ सन्तों की सहभागिता– स्वर्गराज्य में अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए, हे करूणामयी माँ! मेरे लिए प्रार्थना करना। आमेन।

"जो बुराई करता है, वह ज्योति से बैर करता है और ज्योति के पास इसलिए नहीं आता कि कहीं उसके कर्म प्रकट न हो जायें।" (योहन 3:20)

(प ष्ठ 1 का शेष भाग)

ने उसे पहले ही बता दिया था। यहाँ पर प्रभु के शिष्य परीक्षा में हार गये। वे डरकर भाग गये। उन्होंने प्रभु के दुःखभोग में उनका साथ नहीं दिया, प्रभु को उनकी विपदा में अकेला छोड़ दिया, अस्वीकार किया। यह इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने प्रभु के साथ प्रार्थना नहीं की, बल्कि सो गये, प्रभु के तीन बार जगाने पर भी वह न जाग सके और इसलिए परीक्षा में पड़ गये। परीक्षा की घड़ी अचानक उनपर प्रसव पीड़ा की तरह आ गई और तैयारी न होने के कारण वह हार गये।

एक विद्यार्थी पर बोर्ड की परीक्षा अचानक नहीं आती, पर जो तैयारी का समय गवाँ देता, खेलता–कूदता और अन्य कार्यों में लगा रहता है, उसके लिए महत्त्वपूर्ण परीक्षा भी अकस्मात सिर पर आ जाती है। लेकिन तब तक बहुत देर हो जाती है और परीक्षाओं में वह फेल हो जाता है, न उसमें अक्ल काम आती है और न नकल। नतीजा –निराशा, माता–पिता से डाँट–फटकार, मित्रों का उपहास और अकेलापन का साथ। कुछ विद्यार्थी अपनी भावुकता में आत्महत्या भी कर लेते हैं। अत्यधिक निराशा भी शैतान की चाल है और अपना जीवन लेना एक बहुत बड़ा पाप है, ठीक उसी तरह जिस तरह यूदस को अपने किये पर शर्मिन्दगी व स्वंय से घिन्न होने लगी और जब पश्चाताप करने पर भी परिस्थितियाँ अपरिवर्तनीय रहीं, तो उसने जाकर फाँसी लगा ली। पर सत्य तो सत्य ही रहेगा, पाप तो पाप ही रहेगा।

क्या आपने भी कभी अपने जीवन में प्रभु को उनके वचनों को अस्वीकार किया, तिरस्कार किया, उनके साथ विश्वासघात किया और उनसे प्रार्थना नहीं की तथा क्षमा नहीं माँगी, उनके साथ नहीं जाग सके और उनके बार–बार जगाने पर भी उनकी चेतावनी पर ध्यान न दे सके? प्रभु कहते हैं, "जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, जिससे तुम परीक्षा में न पड़ो।" भविष्य में हम सभी के लिए और अधिक संकट, दुःख–पीडाँए, प्रलोभन, अत्याचार तथा विभिन्न परीक्षाँए आ सकती हैं, यदि हम उन पर विश्वास करते हैं। इन सभी का ड़ट कर सामना करने के लिए हमे आध्यत्मिक जागरुकता की सख्त जरुरत पडेगी जो प्रार्थना (व्यक्तिगत, सामूहिक व परिवारिक), उपवास व ईश–वचन (पाठ, मनन–चिन्तन व अध्ययन) के द्वारा संभव है। प्रतिदिन पवित्र माला विनती का जाप करना (विभिन्न निवेदनों के लिए), मध्यस्थ प्रार्थना और पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लेना, तथा वचन पढ़ना इत्यादि हमारी आत्मा को शक्ति व स्फूर्ति प्रदान करेगा तथा हमें ईश्वरीय संरक्षण व मार्गदर्शन भी प्रदान करेगा। तभी हम अन्त तक द ढ़ विश्वास में, प्रेम, सहनशीलता, शान्ति व आनन्द में प्रभु के साथ उनकी क पा के अधीन बने रहेंगे और न्याय के दिन अपना पुरस्कार प्राप्त करेंगे। प्रभु येशु पर विश्वास और उनके वचनों के प्रति आज्ञाकारिता हमें इस जीवन में भी बहुत–से पुरस्कार देती है जैसे शान्ति, पाप–मुक्ति, पवित्र आत्मा के वरदान, रोग मुक्ति, पवित्र दर्शन, ज्ञान–विवेचन इत्यादि। इस वर्ष मार्च 1 से हम चालीसा काल में प्रवेश करते हैं, जो हमारे लिए पश्चाताप, प्रार्थना व उपवास का बहुमूल्य समय है। इस समय को हम न गँवायें। हम हर परीक्षा व प्रलोभन का सामना करने के लिए तैयार हो जायें, अपने सभी पापों के लिए सच्चा पश्चाताप करें, अपनी सभी बुरी आदतों को व बुरे कार्यों को त्याग दें और हर क्षण प्रभु के इच्छानुसार चलने की कोशिश करें। क्योंकि **"अभी उपयुक्त समय है, अभी कल्याण का दिन है।"**

अय्यूब की कठोर परीक्षा में विजय

बाइबिल के पुराने विधान के ग्रन्थों में अय्यूब(योब) का ग्रन्थ सम्मिलित किया गया है क्योंकि इस ग्रन्थ में बताये तथ्यों तथा अनुभवों से मनुष्य प्रज्ञा प्राप्त कर सकता है। इसमें जीवन की कई सच्चाईयों का खुलासा किया गया है। ईश्वरीय महिमा, प्रेम, दया, शक्ति व न्यायशीलता, मनुष्य की असमर्थता, अल्पज्ञता, दुर्गुण व कमज़ोरियाँ, और शैतान की धूर्तता, सीमित शक्ति व उसकी ईश–भक्तों के प्रति ईर्ष्या इत्यादि से हमें यह ग्रन्थ अवगत कराती है। धर्म और काव्यात्मकता की द ष्टि से यह ग्रन्थ बहुत उच्च स्थान रखता है। पर क्या आप जानते हैं कि अय्यूब की परीक्षा कैसे ली गयी थी और वह कैसे उस में खरा उतरा? नहीं, तो अब पढ़ कर जान लें।

अय्यूब एक धर्म भीरू, सम्पन्न और समाज का अत्यन्त प्रतिष्ठित व्यक्ति था। एक बार शैतान ने ईश्वर से अय्यूब की परीक्षा लेने की अनुमति चाही। उसका विचार था कि अय्यूब की भक्ति निःस्वार्थ नहीं है; क्योंकि विपत्ति में पड़ने पर वह ईश्वर–भक्त नहीं रह जायेगा। ईश्वर ने शैतान को अय्यूब की परीक्षा लेने की अनुमति दे दी। शैतान ने अय्यूब की सारी धन–सम्पत्ति नष्ट कर दी और उसकी पत्नी के सिवा उसके परिवार के सभी सदस्यों का विनाश कर दिया। लेकिन घोर विपत्ति में भी उसकी ईश–निष्ठा द ढ़ रही। वह केवल यही कहता : **प्रभु ने दिया था, प्रभु ने ले लिया। धन्य है प्रभु का नाम!**

उसकी परीक्षा यहीं समाप्त नहीं हुई। निर्धन होने के बाद उसे एक घ णित रोग हो गया। और उसका सारा शरीर घावों से भर गया। उसकी पत्नी का धैर्य टूट गया और उसने अय्यूब से कहा कि वह ईश्वर को क्यों नहीं कोसता। लेकिन अय्यूब का कहना था कि **जब हमने ईश्वर का दिया हुआ मीठा चखा, तो कड़वा क्यों नहीं चखेंगे।** जब अय्यूब के तीन घनिष्ठ मित्रों ने उसकी विपत्ति के बारे में सुना, तो वे उसे सान्त्वना देने आये। उसकी दशा देखकर वे स्तब्ध रह गये और यह सोचने लगे कि अय्यूब घोर पापी है: तभी तो ईश्वर ने उसे ऐसा कठोर दण्ड़ दिया है। उन्होंने अय्यूब को अपने पापों पर पश्चाताप करने की सलाह दी, जिससे ईश्वर उसे फिर सुख–शान्ति दे। पर अय्यूब ने मित्रों का आरोप अस्वीकार किया। वह स्वंय को निर्दोष पाता था और ईश्वर के न्याय में उसकी आस्था द ढ़ थी। अपने मित्रों द्वारा पश्चाताप का सुझाव मानना अपने आप को अकारण पापी मानना था। इस से ईश्वर कभी प्रसन्न नहीं होता।

मित्रों के साथ होने वाला वादविवाद 31वें अध्याय तक तीन भागों में चलता है। 32वें अध्याय में एक चौथे मित्र एलीहू का वर्णन है। उसके बोलते समय अचानक ईश्वर स्वंय झंझावात में बोल उठता है। ईश्वर यह नहीं कहता कि उसने केवल परीक्षा लेने के लिए अय्यूब को विपत्ति में ड़ाला है। वह केवल यह संकेत करता है कि मनुष्य को ईश्वरीय कार्यों के औचित्य–अनौचित्य के विश्लेषण का कोई अधिकार नहीं। मनुष्य का धर्म है कि वह ईश्वर के सामने सदा विनीत रहे और अपने पर जो कुछ बीते, उसे ईश्वर की इच्छा समझ कर स्वीकार करे। मनुष्य संसार की साधरण बातें समझने में भी असमर्थ है, तो वह ईश्वर के कार्यों का लेखा–जोखा कैसे कर सकता है? अतः ईश्वर का कार्य उचित है या अनुचित, इसका निर्णय मनुष्य की बुद्धि से परे है।

ईश्वर की वाणी सुन कर अय्यूब ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता तथा अपनी अल्पज्ञता को स्वीकार करता है और अपनी भूल के लिए क्षमा माँगता है। प्रभु अय्यूब से तो प्रसन्न था पर उसके मित्रों पर वह क्रुद्ध हो उठा क्योंकि उन्होंने ईश्वर के विषय में सच नहीं कहा था। इश्वर उन्हें होम–बलि चढ़ाने का आदेश देता है तथा अय्यूब से उनके लिए प्रार्थना करने को कहता है। उन्होंने यह सुनकर प्रभु की आज्ञा का पालन किया और प्रभु ने अय्यूब की प्रार्थना स्वीकार की।

अय्यूब अपनी परीक्षा में खरा उतरा था। इसलिए प्रार्थना समाप्त हो जाने पर प्रभु ने उसे फिर सम्पन्न बनाया और पहले अय्यूब की जितनी सम्पत्ति थी, उसकी दुगुनी कर

"किन्तु जो सत्य पर चलता है, वह ज्योति के पास आता है, जिससे यह प्रकट हो कि उसके कर्म ईश्वर की प्रेरणा से हुए हैं।" (योहन 3:21)

दी। उसे पहले से भी अधिक आशीर्वाद दिया। उसके सात पुत्र और तीन अत्यन्त सुन्दर पुत्रियाँ उत्पन्न हुई। अय्यूब **एक सौ चालीस** वर्ष तक जीवित रहा, अपने पुत्र–पौत्रों की चार पीढ़ियाँ देखीं और बहुत बड़ी उमर में संसार से विदा हुआ। इस ग्रन्थ में जो सनातन प्रश्न उठाया गया है कि मनुष्य के दुःख–सुख का आधार क्या है, उसका समाधान हमें यहाँ मिलता है। उस युग की धारणा थी कि दुःख पापों के कारण प्राप्त होता है और सुख पुण्य के कारण। पर वे यह भी अनुभव करते थे कि कभी–कभी पुण्यात्मा विपत्ति भोगता है और पापी सुख–सम्पत्ति। यहाँ ईश्वर ने यह स्पष्ट किया है मनुष्य के पाप–पुण्य का निर्णय इस जीवन में नहीं होता, म त्यु के बाद होता है। अन्तिम न्याय के दिन ईश्वर पापियों को उनके कुकर्मों के लिए दण्ड़ और पुण्यात्माओं को उनके सुकर्मों के लिए पुरस्कार देगा।

अय्यूब के जीवन के घटनाओं से हम सीखें कि ईश्वर के न्याय पर द ढ़ आस्था व उस पर पूर्ण विश्वास रखना कैसा होता है। हमारे जीवन में भी कभी–कभी परीक्षाँए आती हैं, विपत्तियाँ आ सकती हैं, जो हमारे शुद्धीकरण के लिए, हमें दीन–हीन बनाने के लिए, हमें अपनी असमर्थता, कमज़ोरी व अल्पज्ञता का एहसास कराने के लिए, हमारी एवं दूसरों की शिक्षा व अनुभव के लिए, ईश्वर पर हमारे विश्वास व श्रद्धा के द ढ़ीकरण के लिए, और अन्त में सबकी भलाई व रक्षा के लिए होती हैं। हमें धैर्य के साथ, सत्य और धार्मिकता को अपनाते हुए इन सब का सामना करना है और सब्र रखते हुए अय्यूब की तरह अपने पुरस्कार की प्रतीक्षा करनी है। तभी हम ईश्वर के प्रेम, दयालुता, क पा, महिमा व न्यायप्रियता का अनुभव कर सकेंगे।

सुलेमान का प्रज्ञा–ग्रन्थ यही बताता है– "थोड़ा कष्ट सहने के बाद उन्हें महान् पुरस्कार दिया जायेगा। ईश्वर ने उनकी परीक्षा ली और उन्हें अपने योग्य पाया है। ईश्वर ने घरिया में सोने की तरह उन्हें परखा और होम–बलि की तरह उन्हें स्वीकार किया। ईश्वर के आगमन के दिन वे ठूँठी के खेत में धधकती चिनगारियों की तरह चमकेंगे।"

(प्रज्ञा 3:5-7)

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

"यदि तुम विश्वास करोगे, तो ईश्वर की महिमा देखोगे"

25 वर्ष पुरानी बीमारी से वचन द्वारा पूर्ण मुक्ति

प्रभु येशु को स्तुति, धन्यवाद और महिमा!

25 वर्ष पहले मेरी पीठ में दर्द शुरू हुआ था जो धीरे–धीरे बढ़ता गया। कुछ ही दिनों में मेरे सिर व गर्दन में भी दर्द फैल गया। 2 साल तक मैंने ड़िबरूगढ़(असम) में इलाज करवाया। कोई फायदा न होने पर मैंने कोलकाता मेड़िकल कॉलेज में दिखाया और 6 महीने तक मेरा इलाज चला। असम में करीब 1 लाख रूपये खर्च करने के बाद यहाँ पर मेरे लगभग 40 हज़ार रूपये लग गये। एक डॉक्टर ने दर्द का कारण कैन्सर बताया तो दूसरे ने पेट में बनी गैस। वहाँ से बिहार में और फिर बनारस में कुछ महीने तक इलाज करवाया। फिर मैंने दिल्ली में मेडिकल (AIIMS) में दिखाया। टैस्ट करवाने पर गैस की शिकायत बताई और इलाज शुरू किया। कुछ दिनों बाद दवा छोड़ने पर मेरी हालत और ज्यादा बिगड़ गई। दर्द इतना असहनीय हो गया था कि मुझे ऐसा लगता था मानो मेरे प्राण उडने ही वाले हों। सब जगह दवाँए नाकामयाब रहीं और डेढ़–दो लाख रूपये खर्च करके मुझे अपने गाँव (छपरा जिला, बिहार) वापिस जाना पड़ा।

कुछ दिनों पहले फरीदाबाद में रहने वाले मेरे एक रिश्तेदार ने मुझे अपने यहाँ बुलाया। उन्होंने मुझे "जीवन–धाम" में चल रही चंगाई प्रार्थना–सभा के बारे में बताया और मुझे दर्द निवारण के लिए विश्वास के साथ इतवार की प्रार्थना में भाग लेने को कहा। आज (12 फरवरी) मैं जीवन–धाम में पहली बार आया हूँ। यहाँ आकर बैठते समय मेरी पीठ में बहुत दर्द हो रहा था। पर कुछ ही देर में जब सभी लोग प्रभु की स्तुति करने लगे तो धीरे–धीरे मेरा दर्द कम होता गया और फिर गायब ही हो गया। प्रभु ने मेरे विश्वास को टूटने नहीं दिया। प्रभु येशु ने ही, किसी दवा ने नहीं, मुझे हर दर्द से छुटकारा देकर एक नया जीवन दिया है। **योगेन्दर सिंह** (उम्र–46 वर्ष), बिहार

"मैं प्रभु को प्यार करता हूँ; क्योंकि वह मेरी पुकार सुनता है। मैं जीवन भर उसका नाम लेता रहूँगा; क्योंकि उसने मेरी दुहाई पर ध्यान दिया।"(स्तोत्र 116:1-2)

पैदाइशी दमे की बीमारी से पूर्ण मुक्ति मिली

प्रभु येशु को स्तुति, धन्यवाद और महिमा!

मैं, राजा नाग (उम्र–20 वर्ष), जन्म से

6-मासीय/ 181-दिवसीय "नया-नियम" पाठ्य क्रम

हर महीने हम आपको "नया–नियम" भाग का दैनिक पाठ्यक्रम प्रस्तुत करेंगे जिसके अनुसार आप प्रतिदिन निर्धारित अध्यायों को पढ़कर 6 माह के अन्दर "नये नियम" का पूरा पाठ कर सकेंगे। पिछले माह हमने आपको जनवरी के महीने का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया था। अब प्रस्तुत है **फरवरी के महीने का पाठ्यक्रम :**

तारीख	वचन	तारीख	वचन	तारीख	वचन
1	मारकुस4	12	मारकुस15	23	लूकस10
2	मारकुस5	13	मारकुस16	24	लूकस11
3	मारकुस6	14	लूकस1	25	लूकस12
4	मारकुस7	15	लूकस2	26	लूकस13
5	मारकुस8	16	लूकस3	27	लूकस14
6	मारकुस9	17	लूकस4	28	लूकस15
7	मारकुस10	18	लूकस5	मार्च 01	लूकस16
8	मारकुस11	19	लूकस6	02	लूकस17
9	मारकुस12	20	लूकस7	03	लूकस18
10	मारकुस13	21	लूकस8	04	लूकस19
11	मारकुस14	22	लूकस9	05	लूकस20

"सभी उत्तम दान और सभी पूर्ण वरदान ऊपर के हैं और नक्षत्रों के उस स ष्टिकर्ता के यहाँ से उतरते हैं, जिसमें न तो कोई परिवर्तन है और न परिक्रमा के कारण कोई अन्धकार।" (याकूब 1:17)

शादी के कई वर्षों बाद इन निःसंतान दम्पत्तियों को प्रभु ने संतान का दान दिया

ही दमे की बीमारी से पीड़ित था। पहले 10 साल तक तो कोलकाता में मेरा होमियोपैथी इलाज चला। कोई स्थायी आराम न मिलने पर एलोपैथी इलाज शुरू किया। डॉक्टर ने मुझे ठण्डी चीज़ें जैसे आईसक्रीम, ठण्ड़ा पानी इत्यादि और फल खाने, तैरने से मना कर दिया। बस में यात्रा करना, मोटर साईकिल चलाना और कहीं भी भीड़–भाड़ में निकलना मेरे लिए जोखिम भरा काम था क्योंकि मेरी साँस फूल जाती थी। सर्दियों में मुझे हमेशा बाहर निकलते समय गर्म कपड़े, टोपी इत्यादि पहनने पड़ते थे। मुझे यह बता दिया गया था कि मुझे यदि ज़िन्दा रहना है, तो जीवन भर हर रोज़ दवाई खानी पड़ेगी।मैं हमेशा गोलियाँ जेब में रखता था। मेरे इलाज पर करीब तीस हज़ार रूपये लग गये लेकिन मेरी बीमारी तो जैसे मेरे साथ आजीवन काल के लिए थी।

एक दिन मेरे एक पड़ोसी ने मुझे यहाँ जीवन–धाम में हो रही अदभुत चंगाईयों के बारे में बताया और मुझे प्रार्थना द्वारा ठीक होने का पूरा आश्वासन दिया। पहली बार उनके साथ दिल्ली से आने पर मुझे साँस लेने में बहुत आराम मिल गया। दूसरी बार आने के बाद मैंने प्रभु पर विश्वास कर गोली खानी ही छोड़ दी। आज (15 जनवरी) चार हफ्तों से गोली न खाने पर भी मैं प्रभु की दया से जीवित हूँ। अब मैं कुछ भी खा–पी सकता हूँ, कैसे भी यात्रा कर सकता हूँ और भीड़ में भी घूम सकता हूँ। मुझे अब सांस लेने में कोई तकलीफ नहीं है। इस भयंकर बीमारी से मुझे प्रभु येशु ने ही छुड़ाया है और मेरा उद्धार किया है। प्रभु को करोड़ों बार स्तुति और धन्यवाद!

***राजा नाग**, दिल्ली*

"धन्य है ईश्वर! उसने मेरी प्रार्थना नहीं ठुकराई; उसने मुझे अपने प्रेम से वंचित नहीं किया।" (स्तोत्र 66:20)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

5) मारकुस रचित सुसमाचार
e) अध्याय 4-6

*निम्नलिखित वाक्यांशों में रिक्त स्थानों को भरें, जो सन्त मारकुस के सुसमाचार के दूसरे 3 अध्यायों (अध्याय **4-6**) में से लिए गये हैं। उन्हें ढूँढ कर अध्याय व वाक्यांश सहित हमें अपने उत्तर में लिख भेजें –*

1)"_____ ने यह कहते हुए येशु से प्रार्थना की, "हमें_____ में भेज दीजिए। हमें उन में_____ दीजिए।"

2) "_____ ने यह सब सुन कर कहा,"यह _____ही है, जिसका_____ मैंने_____ है और जो जी उठा है।"

3) "_____और_____के बचे हुए टुकड़ों से_____भर गए। रोटी खाने वाले पुरूषों की संख्या_____हज़ार थी।"

4)"जिस _____से तुम_____हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जायेगा और सच पूछो तो तुम्हें उस से भी _____दिया जायेगा।"

5)"_____ दुम्बाल में_____ लगाये_____ रहे थे।"

6)"मैं चाहती हूँ कि आप मुझे इसी समय_____में _____ _____ का_____ दे दें।"

7)"_____अपने आप_____ पैदा करती है– पहले_____, फिर_____और बाद में पूरा दाना।"

8)"अपने _____, अपने_____ और अपने _____में _____ का आदर नहीं होता।"

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

5) मारकुस रचित सुसमाचार
d) अध्याय 1-3

1) माता, बहनें, खोज। (मारकुस 3:32)
2)दूल्हा, बाराती। (मारकुस 2:19)
3)योहन, पहने, – , टिड्डियाँ। (1:6)
4)कस्बों, उपदेश। (1:38)
5)विश्राम, उचित। (3:4)
6)अशुद्ध, येशु, पुत्र। (3:11)
7)विश्राम, मनुष्य, मानव। (2:27-28)
8)पुराने, कोरे। (2:21)

प्रतियोगिता के नियम

*क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।***
ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।
ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।
घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं?
क्या आप दु:खी.....हैं?
क्या आप रोगी.....हैं?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रात:9.00 बजे से12.30 बजे तक 'जीवन-धाम'696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"जिस तरह आत्मा के बिना शरीर निर्जीव है, उसी तरह कर्मों के अभाव में विश्वास निर्जीव है।" (याकूब2:26)

Edited & Published by Thomas Aripalam, 553/23, Faridabad Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana